

गणेशाय नमः

देवदेवे

सर्वदेवतासु सर्वश्रेष्ठे नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमः श्रीवज्रसत्वाय ॥ १ ॥ गृहस्थि वा न नरुणमभिविधिमाह ॥
॥ मन्त्रगुणतत्ताउक्तं ॥ दिग्गन्धर्वयज्ञं ॥ २ ॥ मन्त्रिपात १ धावे ॥ ग
आनि ॥ अदपृष्टिधनं मन्त्रि ॥ ॥ अथ पूजा मथ मरुगसा नडाग्रहमलुलवा
सङ्गमलुलसकनसवाग ॥ ३ ॥ अथ चक्रविंशति ॥ ॥ ४ ॥ मन्त्रं न
मन्त्रिं न ॥ नडाग्रहमन्त्रि ॥ ॥ ५ ॥ मन्त्रं न ॥ नडाग्रहमन्त्रि ॥ ॥ ६ ॥ मन्त्रं न
थसन्धन ॥ नडाग्रहमन्त्रि ॥ ॥ ७ ॥ मन्त्रं न ॥ नडाग्रहमन्त्रि ॥ ॥ ८ ॥ मन्त्रं न

कंलुलदन्त्रेयतत्ताउक्तं ॥ दिग्गन्धर्वयज्ञं ॥ १ ॥ मन्त्रिपात १ धावे ॥ ग
आनि ॥ अदपृष्टिधनं मन्त्रि ॥ ॥ अथ पूजा मथ मरुगसा नडाग्रहमलुलवा
सङ्गमलुलसकनसवाग ॥ ३ ॥ अथ चक्रविंशति ॥ ॥ ४ ॥ मन्त्रं न
मन्त्रिं न ॥ नडाग्रहमन्त्रि ॥ ॥ ५ ॥ मन्त्रं न ॥ नडाग्रहमन्त्रि ॥ ॥ ६ ॥ मन्त्रं न
थसन्धन ॥ नडाग्रहमन्त्रि ॥ ॥ ७ ॥ मन्त्रं न ॥ नडाग्रहमन्त्रि ॥ ॥ ८ ॥ मन्त्रं न

॥ १ ॥ मन्त्रिपात १ धावे ॥ ग
आनि ॥ अदपृष्टिधनं मन्त्रि ॥ ॥ अथ पूजा मथ मरुगसा नडाग्रहमलुलवा
सङ्गमलुलसकनसवाग ॥ ३ ॥ अथ चक्रविंशति ॥ ॥ ४ ॥ मन्त्रं न
मन्त्रिं न ॥ नडाग्रहमन्त्रि ॥ ॥ ५ ॥ मन्त्रं न ॥ नडाग्रहमन्त्रि ॥ ॥ ६ ॥ मन्त्रं न
थसन्धन ॥ नडाग्रहमन्त्रि ॥ ॥ ७ ॥ मन्त्रं न ॥ नडाग्रहमन्त्रि ॥ ॥ ८ ॥ मन्त्रं न

ॐ विमलविपुलजयवन्जुष्टं हं १२२ स्वाहा ॥ सुत्रायामसधनमया
 स्वस्तिवाक्यनय ॥ ॥ धनज्जुष्टं विविधमनुधा ॥ १२२ स्वाहा ॥ ॥ १२२ स्वाहा ॥
 विष्णुधनी १२२ स्वाहा ॥ ॥ सुत्रायामसधनमसंजुष्टं विविधमनुधा ॥ ॥
 पुनश्चापयाहा ॥ १२२ स्वाहा ॥ ॥ सुत्रायामसधनमसंजुष्टं विविधमनुधा ॥ ॥
 १२२ स्वाहा ॥ ॥ सुत्रायामसधनमसंजुष्टं विविधमनुधा ॥ ॥ १२२ स्वाहा ॥
 या विविधमनुधा ॥ १२२ स्वाहा ॥ ॥ सुत्रायामसधनमसंजुष्टं विविधमनुधा ॥ ॥

चनाय वज्रपूष्यं प्रतिह स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥
लाय वज्रपूष्यं प्रतिह स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥
प्रतिह स्वाहा ॥ ॐ सर्वतथागतसुनलितयेला ॥ ॐ सर्वतथागतसुनलितयेला ॥
सुमांजलिनाथसोः ॥ स्नानदाय ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥
॥ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥
ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥
इदं ते परमं गंधं सहस्रायेति जिकंतथा इदं परमया भक्त्या प्रतिगृह्णु ॐ नमो ॥ ॐ नमो ॥

सिंहुरभुषतो स्वाहा ॥ चेतसि ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥
यथा सुखं ॐ नमो भगवते मा मकी ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥
तिगृह्णु यथा सुखं ॐ नमो भगवते मा मकी ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥
समं नुतं वरीं गंधरसो येतां इदं मिगृह्णु यथा सुखं ॐ नमो भगवते मा मकी ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥
जरा ज्ञाय स्वाहा ॥ नमो ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥
नमः ॥ स्वाहा ॥ ॥ नमो ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥
नार्थं मम यं मार्गं दिदेश भुवं तस्मै नमः ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥ ॐ नमो भगवते मा मकी ॥

कानां सर्वतथागतानां वाप्तिचर्मतां यतिनः जंभः मल्लभनन्नागपिशा
गबुद्धधर्मरतेः सरैस्मररसमवलोकनरत्रयनगरैः ॥ शरोऽचनरनसागरे ॥
उं नमो बुद्धाय कल्याणभासितदुरयाय परात्मसमचिन्ताय त्रैलोक्यैकमुत्तमैः सर्वार्थदुः
रितोऽहं बलिदिव्यगम्भरसो येतं उपभुज्यमानं सर्वसत्त्वानां अनुन्नरायासं मयं वंसो धौ ॥
श्यापनाय दानयति यजोमानत्पादिः उं आः सुगतवज्रतु व्येहोऽहं परस्मात् ॥ मशतुल्लि
लेखानतनेः स्तुतिः शताक्षरः आसिर्वाहः विशर्जनः उं वज्रमंदलं मूः बलिः ॥ शतार्थः उं स्वभाव
विमुक्तो आहररभागद्वरधर्मधातुगभ्ये स्वाहा ॥ उं आकाशधातुगभ्ये स्वाहा ॥ चैत्यभलादुविस

जनयाय ॥ ॥ इति चैत्यकर्मपुजासुरव्याख्यानसमाप्तः ॥